आफ़ताबे

सदाक़त

आफ़ताबे

सदाक़त

āftāb-e-sadāqat

Sun of Truth

by W. Miller
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

आज-कल बेशुमार लोग क्रिसमस मनाते हैं। इसकी क्या वजह है? बेशक मुतअद्दिद लोगों के नज़दीक क्रिसमस की कोई दीनी अहमियत नहीं है। वह अपने घरों में क्रिसमस ट्री सजाते, अपने बच्चों और दोस्त-अहबाब को तोह्फ़े देते और क्रिसमस कार्ड भेजते हैं। वह दोस्तों को मिलने जाते और उन्हें अपने घरों में आने की दावत देते हैं। यों वह क्रिसमस की ख़ुशी मनाते हैं। यह सब कुछ महज़ रस्मो-रिवाज ही है।

लेकिन मुतअद्दिद ऐसे लोग भी हैं जो फ़रक़ सोच रखते हैं। उनका ख़ास ध्यान तफ़रीह पर नहीं बल्कि उस हस्ती पर है जिसका यह यौमे-विलादत है। मेरे मुसलिम दोस्त भी मुझसे कहते हैं, "हम भी आपकी तरह हज़रत ईसा की इज़्ज़त करते हैं।" हाँ, दुनिया के अकसर मुहज़्ज़ब लोग हज़रत ईसा की अज़मत मानते हैं बल्कि कुछ तो उन्हें दुनिया की अज़ीमतरीन हस्ती क़रार देते हैं। इस में हैरानी की बात नहीं कि उनकी विलादते-मुबारका को आलमगीर सतह पर मनाया जाता है। न सिर्फ़ यह बल्कि दुनिया की

अकसरियत अल-मसीह की विलादते-सईद की निसबत से तारीख़ का हवाला देती है।

अकसर मेरे दिल में यह सवाल उठा है कि "लोगों की इतनी बड़ी तादाद क्यों उस हस्ती को जो दो हज़ार साल पेशतर रोमी सलतनत के एक क़दीम और गुमनाम क़सबे में पैदा हुई इस क़दर इज़्ज़त की निगाह से देखती है?" इस सवाल के जवाब में आलिमों ने मुतअद्दिद किताबें लिखी हैं। जो कुछ उन्होंने फ़रमाया मैं यहाँ नहीं दोहराऊँगा। लेकिन मैं अल-मसीह के चंद ऐसे पहलुओं का ज़िक्र ज़रूर करना चाहता हूँ जो उन्हें मुमताज़ बना देते हैं।

कुँवारी से पैदाइश

हज़रत ईसा एक कुँवारी से पैदा हुए। पाक नविश्तों के मुताबिक़ दुनिया की तख़लीक़ से लेकर अब तक सिर्फ़ दो मवाक़े ऐसे आए हैं जब हक़ तआला ने किसी इनसान को बग़ैर बाप के पैदा किया। पहले ख़ुदा ने हज़रत आदम को मिट्टी से बनाया ताकि वह तमाम नसले-इनसानी के बाप हों। फिर एक तवील अर्से के बाद हज़रत ईसा कुँवारी मरियम से पैदा हुए। अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा की विलादत के लिए यह लासानी तरीक़ा क्यों इख़्तियार किया? क्या इसका मक़सद यह तो नहीं कि अल-मसीह "नया आदम"

और एक नई नसल के रूहानी बाप बनें? इस सिलसिले में हक़ तआला का पाक मक़सद ख़्वाह कुछ भी हो, ईसा मसीह की विलादते-मुबारका तारीख़ में एक लासानी वाकिया है। क्रिसमस के मौक़े पर हम इसी की याद में ख़ुशी मनाते और आपकी वालिदाए-माजिदा मरियम के ईमान और पाकीज़गी के लिए अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं।

माफ़ी की ज़रूरत नहीं

हज़रत मसीह की ज़िंदगी में मेरे नज़दीक एक और बात हैरानी का सबब है : उन्होंने एक मरतबा भी यह नहीं कहा कि "मुझे माफ़ कर।" जब हम क़दीम ज़माने के अज़ीम और मुक़द्दस लोगों मसलन हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद और हज़रत दानियाल की ज़िंदगियों का मुतालआा करते हैं तो देखते हैं कि वह सब अपनी कमज़ोर हालत से आगाह थे, इसलिए उन्हें माफ़ी माँगने की ज़रूरत महसूस हुई।

इंजील जलील में अल-मसीह की ज़िंदगी का हाल और काम दर्ज हैं। लेकिन हमें एक हवाला भी नहीं मिलता जिससे ज़ाहिर हो कि उन्होंने कभी कोई ग़लत काम किया या अपने फ़रायज़ को पूरा करने से क़ासिर रहे। हज़रत ईसा को अल्लाह तआला या इनसानों

से माफ़ी माँगने की ज़रूरत नहीं थी। इस दुनिया में अज़ीम फ़ातेह मसलन सिकंदरे-आज़म और नेपोलियन वग़ैरा गुज़रे हैं जिन्होंने अपने ज़बरदस्त दुश्मनों पर फ़तह हासिल की। लेकिन सिर्फ़ ईसा अल-मसीह ही ने इबलीस पर मुकम्मल और हतमी फ़तह पाई। सिर्फ़ वही किसी गुनाह के मुरतकिब न हुए। वह हमेशा ही हक़ तआला के मुकम्मल फ़रमाँबरदार रहे। यक़ीनन तमाम दुनिया को एक ऐसे फ़ातेह का यौमे-पैदाइश मनाना चाहिए।

अपनी तालीम पर पूरा अमल

हज़रत ईसा ने जो तालीम दी उस पर अमल भी किया। दुनिया के सब अज़ीम उस्तादों को अपने शागिर्दों को कहना पड़ा कि "हमारे कामों की नहीं बल्कि हमारी तालीम की पैरवी करो।" इनके बरअक्स हज़रत ईसा के काम और तालीम में बाल बराबर फ़रक़ नहीं था। यह तालीम क्या थी? "रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना। और अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।" उन्होंने इस पर अमल भी किया। उन्होंने न सिर्फ़ अपने दुश्मनों को माफ़ करने और उनसे मुहब्बत रखने की तालीम दी बल्कि इस पर

अमल भी किया। यहाँ तक कि जब उन्हें मसलूब किया जा रहा था तो उन्होंने अपने क़ातिलों को माफ़ करने की दुआ की।

हज़रत ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा कि कामिल बनो जैसा कि अल्लाह कामिल है। हैरानी की बात है कि जब हम अल-मसीह की ज़िंदगी का जायज़ा लेते हैं तो देखते हैं कि वह बिलकुल कामिल थे। ईसा मसीह सच मच कामिल इनसान थे।

क़ुरबानी का लासानी असर

हज़रत ईसा के पैरोकारों का ख़ास ध्यान उनकी सलीबी मौत पर है। अकसर बरादराने-इसलाम को यह बात अजीब लगती है। आख़िर अल्लाह तआला ने यह क्यों होने दिया कि हज़रत ईसा जैसे नेक आदमी को मसलूब कर दिया जाए, कि मुर्दों को ज़िंदा करनेवाले को ज़ालिम तरीक़े से मौत के घाट उतारा जाए?

बेशक कोई भी, यहाँ तक कि इबलीस भी इतना ताक़तवर नहीं कि हज़रत ईसा को शिकस्त दे सके। तो भी उन्होंने अपनी ही मरज़ी से इनसान की ख़ातिर अपनी जान बतौरे-फ़िद्या पेश की। क्यों? इनसान अपने गुनाहों के बाइस सज़ाए-मौत के लायक़ है। हज़रत ईसा ने सलीब पर अपनी जान इसलिए दी कि गुनाहगारों को अबदी मौत से मख़लसी दिलाए।

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। (इंजीले-मुनव्वरा, यूहन्ना 3:16)

इंजील जलील में अल-मसीह को अल्लाह का फ़रज़ंद कहा गया है, लेकिन इससे मुराद जिस्मानी बेटा नहीं बल्कि रूहानी फ़रज़ंद है। चुनाँचे उनकी विलादते-सईद को मनाते वक़्त हम याद करते हैं कि ईसा मसीह इस दुनिया को तलवार से फ़तह करने नहीं आए थे जैसे कि सिकंदरे-आज़म ने किया। वह दुनियावी बादशाह बनने के लिए नहीं आए बल्कि अपनी मौत के वसीले से गुनाहगारों को बचाने के लिए। उन्होंने अपने बारे में फ़रमाया कि

> इब्ने-आदम [यानी अल-मसीह] भी इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों को छुड़वाए। (इंजील मुनव्वरा, मरक़ुस 10:45)

उन्होंने हम गुनाहगारों से अत्नी मुहब्बत रखी कि अपनी जान हमारे लिए दे दी। इसी लिए हम उनसे मुहब्बत रखते हैं, इसी लिए हम उनका हुक्म मानकर उनकी ख़िदमत करना चाहते हैं।

जी उठने का लासानी असर

हज़रत ईसा की मौत के बाद जो कुछ हुआ, वह भी लासानी है। उन्होंने अपने शागिर्दों को पहले ही आगाह कर दिया था कि मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं मुर्दों में से जी उठूँगा। और हुआ भी इस तरह। वह मुहरशुदा क़ब्र से निकल आए और चालीस दिन के दौरान कई मरतबा अपने पैरोकारों पर ज़िंदा ज़ाहिर हुए। फिर अपने शागिर्दों के देखते देखते वह सऊद फ़रमाए। लेकिन वह हमसे दूर नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने अपने पैरोकारों से वादा किया था कि मैं दुनिया के आख़िर तक तुम्हारे साथ रहूँगा।

उन्होंने अपना यह वादा पूरा भी किया। चूँकि वह हमेशा ज़िंदा हैं और अपने पाक रूह की मारिफ़त हर वक़्त हमारे साथ हैं इसलिए उन्हें अपना जा-नशीन मुक़र्रर करने या उसके बारे में पेशगोई करने की ज़रूरत नहीं थी। ईसा अल-मसीह ख़ुद जमात का सर हैं। वह ख़ुद उन लोगों के राहनुमा और सरपरस्त हैं जो उन्हें प्यार करते और उनका हुक्म मानते हैं।

क्या ईसाई मुशरिक हैं?

ग़ालिबन आप कह रहे होंगे, “हाँ, मैं मानता हूँ कि हज़रत ईसा एक अज़ीम इनसान थे। लेकिन क्या ईसाइयों ने उनकी क़दरो-

मनज़िलत को बढ़ा-चढ़ाकर पेश तो नहीं किया? क्या उन्होंने उन्हें वह इज़्ज़त तो नहीं दे दी जो सिर्फ़ अल्लाह तआला का हक़ है?"

बेशक अगर कोई किसी इनसान की बतौरे-ख़ुदा परस्तिश करे तो वह मुशरिक है और उससे सख़्त गुनाह सरज़द हुआ है। लेकिन हम तो यह नहीं करते। हमने हज़रत ईसा को देवता का दर्जा नहीं दिया। हम उनकी बतौरे-ख़ुदा इसलिए परस्तिश करते हैं क्योंकि वह दर-हक़ीक़त ख़ुदा हैं।

हमें किस तरह हज़रत ईसा के बारे में इतना यक़ीन है? पाक नविश्ते यह कुछ साफ़ साफ़ बयान करते हैं। वह साफ़ तौर पर फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा नबी से बढ़कर हैं। वहाँ उन्हें ख़ुदा का कलाम कहा गया है जो इब्तिदा से ख़ुदा के साथ था और हक़ तआला के साथ एक है (इंजील मुनव्वरा, यूहन्ना 1:1-2)। उन्हें ख़ुदा का इकलौता फ़रज़ंद भी कहा गया है (यूहन्ना 1:18; 3:16-18) जिनकी ख़ुदा बाप की तरह इज़्ज़त की जानी चाहिए (यूहन्ना 5:23)।

जब अल-मसीह ने अपने लिए इस क़िस्म का दावा किया तो यहूदी हाकिमों ने उन्हें कुफ़र बकनेवाला कहा और इसी इलज़ाम की बिना पर उन पर मौत का फ़तवा लगाया। लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा को तीसरे दिन ज़िंदा करके साबित कर दिया कि हाकिमों का इलज़ाम ग़लत था, कि इब्ने-ख़ुदा होने का जो दावा ईसा मसीह ने किया था वह दुरुस्त था।

अगर हज़रत ईसा सिर्फ़ एक अज़ीम और नेक इनसान होते तो बिलाशुबा उनकी मौत दुनिया के गुनाह का फ़िद्या न हो सकती। फिर उनकी सलीब पर मौत सिर्फ़ मुक़द्दस शहीद की मौत ही होती। लेकिन चूँकि वह अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और हक़ तआला के साथ एक हैं (इंजील मुनव्वरा, यूहन्ना 10:30) इसलिए सलीब पर उनकी मौत की हैसियत फ़रक़ थी । इसलिए हक़ तआला ने अल-मसीह के वसीले से इनसान के गुनाहों को अपने ऊपर उठा लिया और उनका कफ़्फ़ारा दिया। पौलुस रसूल फ़रमाते हैं :

> अल्लाह ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई।
> (इंजील जलील, 2 कुरिंथियों 5:19)

चुनाँचे अब जब हम अल-मसीह की बैत-लहम में विलादते-मुबारका के बारे में सोचते हैं तो हम फ़रिश्ते के उस पैग़ाम को जो उसने गडरियों को दिया बेहतर तौर पर समझ सकते हैं कि

> देखो मैं तुमको बड़ी ख़ुशी की ख़बर देता हूँ ...आज ही दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिंदा पैदा हुआ है यानी मसीह ख़ुदावंद।
> (इंजील मुनव्वरा, लूक़ा 2:10,11)

यह नौमौलूद हस्ती नबी से बड़ी है, वह ख़ुदावंद है। नजातदहिंदा महज़ इनसान ही नहीं है बल्कि वह अल-मसीह में ख़ुदा है। यही वजह है कि अंबियाए-क़दीम ने ईसा अल-मसीह की पेशगोई करते वक़्त उन्हें "इम्मानुएल" कहा जिसका मतलब है "ख़ुदा हमारे साथ" (यसायाह 7:14; मत्ती 1:21-23)।

यह कितनी बड़ी ख़ुशख़बरी है! लेकिन क्या यह अल्लाह तआला के लिए मुमकिन है कि वह इनसानी शक्ल में ज़मीन पर आए? सबसे पहली बात यह है कि ख़ुदा क़ादिरे-मुतलक़ है। लिहाज़ा अगर क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, इनसान की शक्ल में ज़मीन पर आना और हमारे दरमियान सुकूनत करना चाहे तो यक़ीनन ऐसा कर सकता है। अगर हम इससे इनकार करें तो उसकी क़ुदरते-मुतलक़ा का इनकार करेंगे।

लेकिन याद रहे कि इंजील जलील यह नहीं फ़रमाती कि हक़ तआला जिसे कभी किसी ने नहीं देखा अपना तख़्त छोड़कर ज़मीन पर आया बल्कि यह कि उसका फ़रज़ंद जो दुनिया का नूर और अल्लाह का कलाम है वही "इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ" (इंजील मुनव्वरा, यूहन्ना 1:14)।

इस जगह पर मैं सिर्फ़ एक मिसाल पेश करना चाहता हूँ। जब सूरज हमें अपनी गरमी और रौशनी देता है तो वह आसमान से उतरकर ज़मीन पर नहीं आता। अगर वह ऐसा करता तो हम सब भस्म हो जाते। नहीं, उसकी रौशनी जो उसके साथ एक है हम

तक पहुँचती है। जब हम अपनी खिड़की खोलते हैं तो हक़ीक़त में सूरज को ही अपने घर में आने देते हैं। इसी तरह हक़ तआला ने जो हक़ीक़ी आफ़ताब है अपनी रौशनी यानी अल-मसीह को हमारे पास भेजा है जो उसके साथ एक हैं। उन्हीं के वसीले से वह अपनी रौशनी दुनिया को देता है (इंजील मुनव्वरा, यूहन्ना 1:4-9)। इसी मक़सद के तहत वह इनसानियत का जामा पहनकर पैदा हुए, हमारे दरमियान रहे, मुए और फिर जी उठे। उनका नाम इम्मानुएल यानी "ख़ुदा हमारे साथ" है। क्योंकि उनके ज़रीए ख़ुदा हमारे साथ है।

ग़रज़, हक़ तआला एक पुरअसरार तरीक़े से ईसा अल-मसीह में होकर इस दुनिया में आया ताकि हमें नजात, इतमीनान और ख़ुशी अता करे। इसलिए तमाम दुनिया के लोगों को मिलकर क्रिसमस के मौक़े पर ख़ुशी मनाना वाजिब है।